धर्म जीवन

जनवरी 2005

✡ परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 154वां शुभ जन्म महोत्सव

✡ भाव प्रकाश

✡ BLESSED ARE OUR SOULS

Remaining Part of page 20

corresponding with him. He was so furious with this attitude of his in-laws and because of the fact that he had to repay the loan with interest through the nose from out of his meagre resources, Sanjay Jain decided to leave his wife and their three children with his mother-in-law. Fortunately for him and his family, he came to attend the Mahotsava and in Bhagwan Devatma's "*Dev Jyoti*" which was being profusely distributed there, he was able to see the consequences of the wrong decision he had already made. He now realized how unfair and cruel he would have been to his wife and children for no fault of theirs had he taken such a wrong decision which would have ruined his family life. Can you see what misery love of money and the feeling of revenge for the wrong doing by his in-laws could have brought to the happy Jain family? Can he ever thank Bhagwan Devatma enough for saving his family life from disintegration? Can he ever repay the debt of Bhagwan Devatma who has thrown cold water on his heart burning with revenge? Now, he has his peace of mind and his loving family is intact.

Obsessive love for money has been responsible for turning people into dacoits, thieves, murderers, chain or purse and mobile phone snatchers, gamblers, or making them corrupt and dishonest and as a result bringing so much pain and misery in the lives of their victims.

Most people including children want to have everything done by everyone around them according to their wishes alone. If such a person happens to be a student, he/she will not benefit by good or useful advice given by well meaning parents and well wisher teachers. As a result, they suffer in their studies and spoil their careers. Inumerable such instances exist where such persons have mended their ways on receiving Poojniya Bhagwan's '*Dev Prabhavas*.'

May we always have the attitude to sit at the feet of Bhagwan Devatma to partake his blessings being showered in abundance and make our life worth living for us and others.

- Dr. Vinod Khera

पाठकों को नया वर्ष 2005 ज्यादा से ज्यादा मुबारक हो।

– मंत्री

कल्याण सत्संग

<u>पाठकों</u> की सेवा में निवेदन है कि इस वर्ष कल्याण (बठिंडा) खास सत्संग व माता पिता दिवस 11 से 13 फरवरी, 2005 को रखा गया है। इस शुभ अवसर पर ज्यादा से ज्यादा पहुंच कर लाभ उठाएं।

– मंत्री

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 1
जनवरी 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 154वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 154वां शुभ जन्म महोत्सव 25 दिसम्बर से 28 दिसम्बर तक श्रीमति शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18 डी, चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियां की गईं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का अपने साथियों के साथ दौरा किया और सेवकों और श्रद्धावानों को महोत्सव पर पहुंचने के लिए प्रेरणा दी। बहुत से पत्र इस मकसद के लिए लिखे गए। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। इनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद पहुंचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमंत्रण पत्र छापे गए और अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए इस साल पंडाल पहले की तरह से बनाया गया। उसके लिए तरपाल डाली गई। पण्डाल को अंदर से बर्फ जैसी सफेद चादरों से ऊपर नीचे खूब सजाया गया। बिजली के सुन्दर फानूसनुमा शैण्डलियर लटकाए गए। गुरु महाराज का बड़े साईज़ का फोटो और माटोज़ सजाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पण्डाल के दोनों तरफ सजाई गईं। हाल को जगदीश जी, मोना जी, रश्मि जी तथा अन्य अध्यापिकाओं ने मिल कर सजाया। इससे हाल की शोभा और भी बढ़ गई। पौधों, गमलों, बांसों पर झण्ड़े, बड़े विजय पताका आदि ने सारे आंगन को सजा दिया। हमेशा की तरह पराली का अच्छा प्रबंध किया गया और कमरों में बिछाई की गई। बैंड आदि का प्रबंध किया गया। धर्मशाला प्रबंध ने सारी सफेदी आदि करवा दी। लंगर और कैंटीन का बहुत अच्छा प्रबंध किया गया। श्रीमान जगदीश जी, सुखदेव व मधुसूदन जी आदि ने सब तैयारियों में बहुत संग्राम किया और बहुत श्रद्धापूर्वक सेवा की। जगदीश जी कई दिन इन सेवा के कामों में भाग भाग कर सेवाकारी होते रहे और उन्होंने खुशी खुशी यह संग्राम किया। इस पावन अवसर पर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, यू. पी., बिहार, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पहुंचे। कल्याण, भुच्चो मण्डी,

गोनियाना मण्डी, मोगा, भटिंडा, थराजवाला, संगरुर, मोहाली, समराला, मोगा, लुधियाना, पंचकूला, कुंआ खेड़ा, धर्मशाला, महिमा सवाई, पदमपुर, गजसिंह पुर, खतौली, मल्लेका, मौजदीन, गुरु हरसहाय दाणी (मौजदीन), केसूपूरा बनी, सिरसा, मुज्जफर नगर, डबवाली, अम्बाला, यमुनानगर, रायपुर रानी, दिल्ली, रोहतक, जोधपुर, मण्डवाड़ी, शामली, तुलसीपुर रायपुर कलां, दड़वा, चण्डीगढ़ आदि स्थानों से सैंकड़ों यात्री पहुंचे।

लोकल अंग्रेजी और हिंदी अखबारों, ट्रिब्यून, हिन्दुस्तान टाईम्स, इंडियन एक्सप्रैस आदि में चारों दिन महोत्सव के प्रोग्रामों की सूचना छपती रही। यात्रियों के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का भरपूर प्रबंध था। यह सेवा प्रत्येक वर्ष की तरह श्री सीताराम जी और बूटा सिंह जी चौहान खुशी खुशी करते रहे। घण्टा बजाने का काम श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा करते रहे। पुस्तकों की स्टाल पर श्री हंस राज जी, श्री वर्मा जी डयूटी करते रहे। भजनों का गान श्री जगदीश जी करते रहे। दफ्तर का काम श्री जगदीश जी और उनके सुपुत्र करते रहे। हारों और गैसों का प्रबंध भी इसी पार्टी ने सम्भाला।

गुरुदेव राज जी भजनों के गान में बहुत सहायक हुए। बच्चों की सभा को श्रीमती मोना जी और डा. शशि बाला जी ने सम्भाला। बाहर से आने वाले यात्रियों की संख्या 200 से ऊपर थी, बाकी स्थानीय जन भी बहुत अच्छी संख्या में आकर शामिल होते रहे। विशेष दिन चण्डीगढ़ कोचिंग सैन्टर के स्टाफ और विद्यार्थी प्राय: 300 की तादाद में आकर शामिल हुए।

खाने का प्रबंध बहुत आला रहा। उपस्थित जन बहुत धन्य धन्य होते रहे। दान भी आशाजनक हुआ। इन सबके लिए गुरु महाराज और अन्य सहायकारी शक्तियों का जितना धन्यवाद किया जाए कम है।

महोत्सव के अवसर पर प्रत्येक सभा में देवप्रभावों का अति हितकर मण्डल बनता रहा, उसका ब्यान करना कठिन है। सभाओं के प्रोग्राम का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है।

प्रवेश सभा 25 दिसम्बर, 2004 शाम 4.00 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:– दूसरा घण्टा बजने के साथ ही श्रीमान जगदीश जी ने "हमारे पूजनीय सतगुरु जी तुम हो धन्य, जी तुम हो धन्य" अलापना शुरू करके पावन महोत्सव की कार्यवाही आरम्भ की। श्रीमान जगदीश जी ने बहुत अच्छी तरह हृदयगत भावों के साथ इस भजन का गान किया। इसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सुन्दर फूलों के हार से छवि द्वारा अर्चन किया गया। उच्च स्वर द्वारा देव स्तोत्र के गान के बाद सभापति जी ने देव स्तोत्र की व्याख्या की। फिर सभापति जी ने महोत्सव की सफलता के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के दरबार में हृदयगत भावों से आशीर्वाद प्रार्थना की।

इस सभा में फरमाया गया कि आज का दिन विश्व के इतिहास में एक विशेष दिन है। मनुष्य के विकास के क्रम में 154 साल पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा का ज़हूर हो गया। मनुष्य अपनी सुख अनुरागी प्रकृति से मजबूर होकर असत्य व अशुभ की गतियां करके अपने अस्तित्व व दूसरों के अस्तित्वों की हानि करता है। नेचर ने मनुष्य को इस आत्मिक तबाही से बचाने के साधन पैदा कर दिए। हमारे देश में भी दूसरे देशों में भी हर वर्ष अनेक उत्सव मनाए जाते हैं जिन में लाखों व करोड़ों की संख्या में लोग इकट्ठे होते हैं। आज के

दिन दो दूसरे उत्सव भी मनाए जा रहे हैं। हजरत ईसा मसीह का आज जन्मदिन है। जिसको दुनिया में जगह जगह मनाया जा रहा है। आज के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे साहिबजादे व माता गुजरी का बलिदान दिवस है जिसकी 300 साला शताब्दी मनाई जा रही है। सारे पंजाब में विशेष लंगर लगाए जा रहे हैं। सरहंद व फतेहगढ़ साहिब में लाखों की गिनती में श्रद्धालुओं की रौनकें लगी हुई हैं।

जब हम इन रौनकों व गिनती पर विचार करते हैं कि हमारी यह थोड़ी सी गिनती जो सैंकड़ों तक सीमित है तो साधारण महसूस हो सकता है। पर यह महोत्सव अपनी लासानी तासीर के कारण अद्वितीय है। नेचर के विकास के क्रम की सबसे उच्चतम देन परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आविर्भाव से उनके देवप्रभावों का प्रसाद जो हमें सिर्फ यहीं मिल सकता है, वह मनुष्य आत्मा के लिए सब से बढ़कर जरूरी चीज़ है।

मनुष्य अस्तित्व में उस की आत्मा ही मुख्य व सार वस्तु है। वह भी विश्व का अंग होने के कारण परिवर्तन के नियम के अधीन है। देव ज्योति आत्मिक जगत को रोशन करके आत्म विकास दर्शाती है। मनुष्य अपनी गलतियां देखने के लिए व सुधारने के लिए मजबूर हो जाता है। एक स्त्री ने इसी जगह पर अपने पति के प्रति अपमान के लिए भरी सभा में बड़े दु:ख से भरकर माफी मांगी थी। एक सरदार जो पापों में बहे जा रहे थे, उन्होंने इस वातावरण द्वारा जीवन में रुहानी इंकलाब प्राप्त किया। यह देव ज्योति व देवतेज द्वारा सम्बंधों में स्वर्गीय लीला पैदा करते है। पदमपुर से एक भद्र पुरुष ने अपने गलत रास्ते के कारण हुई पिता जी की मौत के लिए अपने आप को जिम्मेदार महसूस किया। वह नशे व जुए के रास्ते के छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। दुनिया में और सफलताएं तब ही लाभदायक हो सकती हैं अगर मनुष्य देवात्मा की रोशनी में वास करे। धन, विद्या, पद, प्रभुत्व सब निरर्थक हो जाते हैं आत्मिक अंधकार में। थोड़ी विद्या, थोड़ा धन भी जीवन को सार्थक बना देता है भगवान के देवप्रभावों के प्रसाद से। स: औलख सिंह जी को जब यह प्रसाद मिला तो वह अजीब आत्म बल के साथ भर गए व उन्होंने कहा कि औलख सिंह यह नशा खाते खाते नहीं मरेगा परन्तु छोड़ते छोड़ते मरेगा। मानसिक व हार्दिक विकास के लिए यह देवप्रभाव अपनी लासानी विशेषता रखते हैं। श्रीमान गुरबख्श सिंह जी थोड़ी विद्या सम्बंधी योग्यता रख कर भी सदा आत्मिक विद्या के कमाल के पंडित बन गए।

मैं यह महसूस करता हूं कि बाकी सारे दुनियावी सम्बंधी व सामान इंसान के लिए विकासकारी बन जाते हैं अगर परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देवप्रभाव मिलते रहें, नहीं तो यह पता नहीं कि इनमें से धन, विद्या व कोई पद ही जीवन घातक बन जावे।

आप सब जो अलग अलग स्थानों से ऐसे सच्चे जीवनदाता का जन्म महोत्सव मनाने के लिए, उनके देवप्रभाव प्राप्त करने के लिए, अपने आत्मा को जानने के लिए व उस का विकास करने के लिए इस ठण्ड के मौसम में कष्ट उठा कर भी पधारें हैं। आप सब को मैं धन्य धन्य कहता हूं, मुबारकबाद कहता हूं। आप के स्वागत के लिए चण्डीगढ़ निवासियों ने इस सुन्दर पंडाल को सजाकर तैयार किया हुआ है। मैं चण्डीगढ़ निवासियों की तरफ से, देवधर्म प्रबंध की तरफ से आप सब को जी आया, स्वागत करता हूं। खड़ा होकर आप सब को झुक कर प्रणाम करता हूं। व यह महसूस करता

हूं कि आप ने इस तरफ जो भी कदम रखे हैं उस में मैं दिली भावों के साथ सिर आंखे बिछाता हूं।

इस उत्सव पर पहुंच कर आत्मिक आहार प्राप्त करने के लिए भी नियम है जैसे नेचर में दूसरे पदार्थ प्राप्त करने के लिए हैं। सबसे बड़ा नियम अपने आपको दीन बनाना है। अगर कुछ भी हमारा अहं कम होता है तो देवप्रभावों के प्रवेश करने के लिए स्थान बन जाता है। हम सुख अनुरागी मनुष्य गलतियों व कमियों के भरे हुए हैं। हम सेवकों के लिए आने वाली सभाओं में ऐकाकारियां पहनकर आना, समय पर पहुंचना, दुष्ट चिन्ताओं से बचना, निंदा से बचना, देवधर्म मिशन की सफलता के लिए शुभ कामना करना, ऐसे नियम है अगर हम इन्हें हार्दिक भावों के साथ पूरा करेंगे तो हम इस महोत्सव से आत्मिक खुराक से मालामाल हो जाएंगे।

इस के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी यात्रियों का बहुत गहरे भावों के द्वारा स्वागत किया व अपनी दिली खुशी का प्रकाश किया। अगले दिन की कार्यवाई का ब्यान किया।

चार बार परमपूजनीय भगवान देवात्मा की जय ध्वनि करके यह शानदार सभा सम्पन्न हुई।

26 दिसम्बर, 2004 समय 8.30 बजे

विषय : "परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध"

भजन : "हे सत्य, शिव, सुन्दर व्रत धारी..... ..."

भजन के बाद परमपूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन! देव स्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने सतगुरु के देव दरबार में सभा की सफलता के लिए हृदयगत भावों से आशीर्वाद प्रार्थना की।

इसके बाद श्रीमान जगदीश जी ने उच्च भावों से भरकर

"परम आवश्यक जीवनदायक मेरे भगवन का सम्बंध" भजन का सुन्दरलय में गान किया।

हमारा शारीरिक जीवन हर समय हर जगह सम्बंधों से जुड़ा हुआ है। व इन्हीं सम्बंधों पर ही निर्भर है। नेचर के चारों जगत हमारे जीवन का कारण है। परन्तु कुछ ऐसे सम्बन्धियों का सम्बंध है जिनके बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हवा बेशक भौतिक पदार्थ है परन्तु इसके बिना जीवन सम्भव नहीं। यह हमारे लिए जीवनदायक सम्बंधी है। यह बेशक बेजान है। परन्तु इसके बिना हम सांस भी नहीं ले सकते। इसी तरह पानी का सम्बंध है। कुछ घंटे ही इसके बगैर जीवन बचता है। पानी है बेशक बेजान परन्तु मनुष्य के लिए अमृत है। हमारी पृथ्वी से ही हमारे जीवन के लिए हर जरूरी वस्तु प्राप्त होती है। हमारी खुराक, पोशाक, घर आदि सब कुछ इसी की ही देन है। इसलिए पृथ्वी भी हमारा परम आवश्यक जीवन दायक सम्बंधी है। सूरज के बिना किसी किस्म के भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारी धरती पर जितने भी जीवन हैं यह वनस्पति जगत, पशु जगत, मनुष्य जगत सब के जीवन का दाता सूरज है। इसलिए यह हमारा परम आवश्यक जीवन दायक सम्बंधी है। शायद इस कारण ही इस को देवता मान कर पूजा की जाती रही है या की जाती है।

मनुष्य जन्म के लिए उस के माता पिता का सम्बंध जरूरी है। प्रत्येक बच्चा माता पिता द्वारा ही इस विश्व में है। इसलिए माता पिता भी परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंधी हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि अगर हवा, पानी, धरती, सूरज, माता पिता परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंधी हैं तो वह कौन सा जीवन है जिसके बारे में कहा गया है कि

परम पूज्नीय भगवान देवात्मा का सम्बंध परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध है? यह एक वैज्ञानिक सचाई है कि विश्व में बेजान पदार्थ की शक्ति से जीवन का आरम्भ व विकास हुआ है। विकास का सिलसिला जारी है। जीवधारियों के विकास की लड़ी में मनुष्य का विकास हुआ है व हो रहा है। यह ठोस हकीकत है कि मनुष्य सुख अनुरागी है। कुछ सुखों का प्यार इसको पशु जीवन से भी नीचे ले जाता है नशो का प्यार इंसान के जीवन को इस हद तक नीचे ले जाता है। यहां पर इंसानी जीवन को जीवन ही नहीं कहा जा सकता। धन का प्रेम भी मनुष्य को अपना व अपनों का दुश्मन बना देता है।

मनुष्य के यह नीच सुखों के प्रेम व घृणाओं का जीवन, जीवन कहने के लायक नहीं। नेचर ने देवात्मा के रूप में एक अद्वितीय हस्ती को पैदा किया है जिनके देवप्रभाव जब अधिकारी आत्मा तक पहुंचते है तो वह आत्मा नई किस्म की होश व प्रेरणा अनुभव करते हैं जो और किसी भी सम्बंधी द्वारा सम्भव नहीं। एक नौजवान ने बताया कि मैं बच्चे के इलाज की तरफ ध्यान न दे सका क्योंकि मैं नशे की गुलामी में था, इसलिए बच्चा मर गया। सामाजिक जीवन में उस पिता के जीवन को जीवन नहीं कहा जा सकता जो बच्चे के ईलाज से गाफल हो जाए। एक बहन अपनी बहन के दहेज को देखकर कामना कर रही है कि वर्षा आ जावे व यह सारा कुछ बर्बाद हो जावे तो मेरा दिल ठंडा हो जावे। किस प्रकार एक एक जन अपने नीच भावों द्वारा क्या अपनी हानि व क्या दूसरों की हानि करने के लिए मजबूर है जिस को सभापति जी ने शानदार उदाहरणों द्वारा समझाने की कोशिश की। जिस स्तर पर मनुष्य पहुंच गया है वहां नशों की घोर गुलामी का जीवन, धन की अन्धी गुलामी का जीवन, ईर्ष्या, द्वेष, कृतघ्नता के जीवन को जीवन नहीं कहा जा सकता। परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपने अद्वितीय देवप्रभावों द्वारा ऐसे नीच जीवन से मनुष्य को खबरदार करते हैं व नई किस्म के जीवन का दान देते हैं। ऐसे देवप्रभावों में आकर कैसे एक नया व अति हितकर जीवन जीते हैं उनके बारे में फरमाया गया। ऐसे देवअसरों में आकर मनुष्य अपने नीच भावों से सचेत होकर उसके परिशोध करके एक नया जीवन जी कर अपने आपको जहां धन्य धन्य महसूस करते हैं वहां परमपूजनीय भगवान देवात्मा को बार बार धन्यवाद देते नहीं थकते। किस प्रकार एक एक पटवारी, एक एक नाशुक्रेपन से भरे हुए जीवन, एक एक अध्यापक को यह देवअसर ईमानदार, सेवाकारी, शुक्रगुज़ार, हमदर्द व दूसरों को प्यार करने वाला बना देते हैं, उसका वर्णन किया गया।

ऐसा नए स्तर का जीवन देने वाला कोई और नहीं परन्तु सिर्फ व सिर्फ भगवान देवात्मा ही ऐसे सम्बंधी है जो अधिकारी आत्माओं को नीच जीवन से मुक्त करते हैं व उच्च भाव पैदा करते हैं जो मनुष्य के लिए परम आवश्यक सम्बंध है।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया है कि हमारे अस्तित्व में मुख्य वस्तु हमारा आत्मा को मौत से बचाने के लिए व उसका विकास करने के लिए देवात्मा का सम्बंध परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध है। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

इसके बाद सैक्रेटरी साहिब ने अगले दिन का प्रोग्राम बताया और चार बार जय ध्वनि के साथ यह सभा सम्पन्न हुई।

दिनांक 26 दिसम्बर, 2004

सायं 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर

वक्ता : मिसिज़ सुरजीत बराड़ रिटायरड प्रिंसीपल

विषय : सत्य मुक्तिदाता परम पूजनीय भगवान देवात्मा

सभापति : डा. विनोद खेड़ा

इसके बाद मिसिज़ सुरजीत बराड़ ने विविध धर्मों में मुक्ति की जो परिभाषाएं दी गई हैं, उनके विषय में बताया। साधारणत: मुक्ति का अर्थ विविध प्रकार के दुखों से बचने या ब्रह्म में लीन होने का अर्थ समझा जाता है। विज्ञान की रोशनी के बिना कल्पनाएं बांधना और मिथ्या मूलक विश्वास रखना कुदरती था। इन शिक्षाओं से मानवता की महा हानि हुई है।

मनुष्य की ऐसी अवस्था में भी कुछ विचारशीलों ने यह भविष्यवाणी की थी अवश्य ऐसा नेह कलंक आएगा, जो धर्म और विज्ञान को मिलाकर नई विचारधारा को जन्म देगा। इस संदर्भ में बहुत से विचारशीलों की भविष्यवाणियां बताई गईं। इसमें श्री गोबिंद सिंह जी, रविन्द्रनाथ टैगोर, मिस्टर जे. एस. मूर आदि कई विचारशीलों की भविष्यवाणियां सम्मलित थीं कि ऐसा जहूर सम्भवत: भारत में ही होगा।

आखिरकार उनकी भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध हुईं और भारत में ऐसा आविर्भाव हुआ, जिसकी सत्य अनुराग की शक्तियों ने उन्हें धर्म के विषय में विज्ञान पर आधारित खोज करने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने फरमाया कि मनुष्य का अस्तित्व शरीर और आत्मा को लेकर है। जैसे शरीर को तन्दरुस्त रखने के लिए उसके रोगों से मुक्ति अवश्यक है, उसी प्रकार मनुष्य आत्मा की सुख लालसाएं अपनी तृप्ति करते करते उन सुखों के अनुरागों और उनसे उत्पन्न नीच घृणाओं में परिवर्तित हो जाते हैं। यही नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं आत्मा के रोग हैं। इन नीच अनुरागों से मुक्ति अर्थात पाप से मुक्ति, मिथ्या से मुक्ति, नीच वासनाओं से मुक्ति इसलिए आवश्यक है कि यह अपनी तृप्ति में लगाकर आत्मा को अंधा और कठोर बना देते हैं। उसे उल्टा दृष्टा बना देते हैं, हितकारी शत्रु और शत्रु हितकारी नजर आने लगते हैं और नाना प्रकार के अनुचित दुखों में फंसाते हैं। धीरे धीरे आत्मिक बल को घटाकर उसकी मृत्यु का कारण बनते हैं। धन अनुराग, आलस्य, मोह, स्वार्थ, घृणा, घमंड, स्वेच्छाचारिता, मान प्रशंसा आदि के अनुराग किस प्रकार तृप्ति पाते पाते मनुष्य का जीवन बर्बाद कर देते हैं, इनको विस्तार से बताया गया। पूजनीय भगवान फरमाते हैं कि यह सब आत्मिक रोग हैं, इनसे मुक्ति ही सच्ची मुक्ति है।

यह मुक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है? किसी नाम जपने, तीर्थ स्थान की यात्रा करने, किसी पवित्र नदी में नहाने या ईश्वर की भक्ति में लीन होने से मनुष्य की नीच सुख अनुरागों वा नीच घृणाओं से मुक्ति नहीं हो सकती। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सत्य अनुराग और हित अनुराग से जो एक नई ज्योति विकसित हुई है, उसमें यह सामर्थ्य है कि वह इन सुखों के भयानक रूप को दिखाती है, उन नीच सुखों के प्रति घृणा संचार करके अपने देव बल के द्वारा उनसे मोक्ष देते हैं।

उनके देव प्रभावों के मण्डल में बैठकर ही एक एक बेईमान, धन का लोभी और रिश्वतखोर यह देखने के योग्य बनता है कि अपने एक नीच अनुराग से किस प्रकार उसने दूसरों पर अत्याचार किए हैं, दूसरों का हक छीना है। यह याद करके वह न केवल ईमानदार बनता है, बल्कि रिश्वत लिए हुए रूपए वापिस और सूद सहित वापिस करता है और इस प्रकार अपने कुकर्मों से सच्ची मोक्ष हासिल करता है। एक एक उदण्ड, कृतघ्न बच्चा

माता पिता के लिए, अध्यापकों के लिए, जो कलंक बना हुआ था, आज्ञाकारी बनकर माता पिता वा अन्य उपकारियों के लिए सेवाकारी बनने के योग्य बनता है, इस प्रकार वह अपने नीच कुकर्मों से निजात पाता है। एक एक अन्यायकारी पति अपनी पत्नि के चरणों में सिर रखकर क्षमा प्रार्थना करता है तो वह अपने नीच जीवन से किसी सीमा तक मुक्त हो सकता है। इस प्रकार कई उदाहरणों के द्वारा सत्य मुक्ति के विषय में ज़ोरदार ब्यान किया गया।

इससे आगे बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा केवल नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से ही मोक्ष नहीं देते, वह मनुष्य का आत्मिक विकास भी करते हैं। क्योंकि केवल नीच सुख अनुरागों से मुक्त होकर मनुष्य विकास नहीं पाता, उसके लिए उच्च वा सात्विक भाव पैदा करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति से मिथ्या, अहित और पाप मूलक गतियों का हानिकारक रूप नज़र आता है और तेज से उनसे निकलने का बल मिलता है और उन्हीं की रोशनी में उच्च भाव आत्मा की खुराक नज़र आते हैं, जिनके पैदा करने से आत्मिक विकास होता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा वह अद्वितीय सूरज हैं जो हमारी नीच लालसाओं को भस्म करने और हमारा उच्च जीवन में विकास करने की सामर्थ्य रखते हैं और किसी पीर, पैगम्बर में यह सामर्थ्य नहीं है।

अंधकार और पापों के नाशकर्ता
चढ़िया आत्म जगत दा भान लोको,
पल्ला तुसीं वी फड़ो देवात्मा दा
जेकर लोड़दे सच्चा कल्याण लोको

इसके साथ ही वक्ता ने अपना ब्यान बंद किया।

27 दिसम्बर, 2004
महोत्सव का विशेष दिन

प्रात: 6:30 बजे यात्रीगण फूलमालाएं लेकर धर्मशाला के आंगन में एकत्रित हो गए और उन्होंने गुरु महिमा के गीत गाने शुरु किए। यह दृश्य बहुत सुन्दर था। एक तरफ बैंड बाजा तैयार खड़ा था। दूसरी तरफ धर्म सम्बंधी एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर चाव भाव से भजनों का गान कर रहे थे। और कितने ही श्रद्धा भाव से झूम रहे थे। सूर्य की पहली किरण के साथ घंटा बजने लगा उसके साथ ही भगवान देवात्मा की जय ध्वनि के नारे बुलंद होने लगे। उसके पश्चात सैक्रेटरी साहिब ने श्रद्धा भाव से भरकर भगवान के शुभ जन्म दिन की और आविर्भाव की खुशियों और मुबारकबाद को बहुत अच्छी हाजरी में उपस्थित यात्रीगणों में बांटा। मानवता का सौभाग्य और चारों जगतों का कल्याण जो भगवान के आविर्भाव से जुड़ा हुआ है, उसको अनुभव करवाया। मानवता पर देवात्मा के अध्यात्मिक उपकारों का स्मरण करवाया। सौभाग्य से भरे हुए दिल से गुरु महाराज के जन्म स्थान, माता पिता और पूर्वजों को स्मरण किया और धन्यवाद दिया। भगवान के निराले कारज के चारों दिग फैलने की कामनाएं की। बहुत श्रद्धा और उल्लास के वातावरण में जय ध्वनि की गई। फिर बैंड बाजा बजने लगा और उसमें कुछ श्रद्धावान जन खुशी से नाचते हुए दिखाई दिए और कुछ जन खुशी की तालियां बजाते हुए दिखाई दिए। दूसरी तरफ सब यात्रियों ने फूलमालाएं हाथ में लेकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा का पावन छवि के द्वारा अर्चन का साधन किया। इसके साथ ही महासभा आरम्भ हुई।

समय 8.00 बजे

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

भजन : "देवजीवन धारी भगवन पूर्ण धर्म अवतार"

का गान किया गया। फिर देवस्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने आशीर्वाद प्रार्थना की।

इसके बाद "अद्वितीय जीवन व्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" वाले भजन का गान किया गया।

सभा का विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका घोर तप व उसके सम्बंध में हमारी जिम्मेदारियां।

विकास क्रम को समझना इंसान के लिए जरूरी है। विकास क्रम नेचर के चारों जगतों में प्रतिमुहूर्त जारी है। रोशनी के घरेलू स्रोतों का विकास हुआ है, सफर के साधनों का विकास हुआ है। घरों का विकास हुआ है, मनुष्यों का विकास हुआ है, मनुष्यों के शारीरिक विकास ने योधा व पहलवान पैदा किए हैं। मानसिक विकास ने वैज्ञानिक पैदा किए हैं। उच्च भावों के विकास ने सात्विक पुरुष व परोपकारी पैदा किए हैं। देवभावों व देवअनुरागों के (सत्य व शुभ का) विकास ने देवात्मा को पैदा किया है। विकास क्रम अजूबों की मां है। विश्व में सूर्य व उनके ग्रहों का विकास होता रहता है। पृथ्वी हमारे सूर्य का ग्रह है। इसका भी विकास हुआ है। अनुकूल हालात में जीवन उत्पन्न हुआ। फिर उसके विकास की कथा है। पशुओं में से होता हुआ जीवन मनुष्य तक पहुंच गया। फिर मनुष्य के बहुपक्षी विकास का क्रम जारी हो गया। देवअनुरागों में विकास द्वारा देवजीवन पैदा हो गया। सात्विक मनुष्य केवल एक एक पक्ष में ही हित ला सकते हैं, देवात्मा सब पक्षों में हित के पूर्ण अनुरागी हैं। अक्सर यह माना जाता है कि विश्व को ईश्वर ने पैदा किया है, उसको चलाने वाला भी ईश्वर ही है। कुछ गिनती के लोग विकास क्रम को देखते हैं। और यह विश्वास करते हैं कि विकास क्रम में नए सूर्य और ग्रह की उत्पति होती है। विश्व को विश्व की शक्तियां चलाती हैं। मनुष्य को उसकी भाव शक्तियां चलाती हैं। उसके सुख अनुराग व घृणाएं उसको चलाती हैं। सुख अनुरागी का मोह, मिथ्या और पाप में फंसना लाजमी है। इस प्रकार वह आत्मा को रोगी, नीच व दुःखी बनाते हैं।

देवात्मा के अंदर सत्य और शुभ के लिए जोरदार आकर्षण पैदा हो गया। झूठ व अशुभ के लिए जोरदार विकर्षण पैदा हो गया। देवात्मा का मनुष्य आत्मा से श्रेणी का अंतर हो गया।

मनुष्य का पापाचार और मिथ्याचार मिटाए बगैर, उच्च भाव व सत्य विश्वास पैदा किए बगैर, हित नहीं हो सकता। अपने हित अनुरागों से हित अनुरागी मजबूर हो गए जगत हित करने के लिए। लोगों ने इसका स्वागत नहीं किया। जोरदार विरोध किया और आज भी हो रहा है। इंसान अबोध अवस्था के कारण देवात्मा को शत्रु समझते हैं। देवात्मा पापाचार व मिथ्या पर हमला करने के लिए मजबूर थे। इसलिए लोग उनके विरोधी, शत्रु या दुश्मन बन गए। देवात्मा Miss Mary Carpenter के मिशन से, महात्मा बुद्ध के जीवन से, Major टक्कर, बूथ और उसकी धर्मपत्नि के भावों से प्रेरित हुए और उनके हित अनुराग ने और बल लाभ किया।

सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर निराला जीवन व्रत धारण कर लिया। व्रत धारण करने के बाद वह एक नए लोक में पहुंच गए। उन्होंने महसूस किया कि मेरे उच्च भाव सतेज हो गए। मेरी बेड़िया कट गईं। जमीन पर पड़ी तड़पती हुई मछली को फिर जल प्रवाह मिल गया। उन्होंने धन्य-धन्य व कृतार्थ बोध किया। देवात्मा की विरोधता और उत्पीड़न को हम कठोर हृदय दर्शन नहीं कर सकते। मुकदमों के द्वारा देवात्मा को उत्पीड़ित किया जाता रहा, जांकन्दनी में से गुज़ारा गया।

सुन्दर, पवित्र, ज्योतिर्मय, सर्वांग हितकारी कैसे आराम की आशा कर सकता है? देवात्मा के काम को शैतानी काम कहा गया, मारने के लिए कामनाएं की गई। चारों तरफ कोलाहल मच गया। (कुल रूह व जिस्म टुकड़े-टुकड़े हो जाता रहा था)। देवात्मा की खिलाफत के लिए विराट सभाएं की गईं। भगवान देवात्मा ने दो दिन बाद उसका जवाब देना चाहा परन्तु विरोधियों ने इतना विध्न डाला की सभा न हो सकी।

चन्दा सिंह द्वारा 9 मुकदमे 5 साल तक चलते रहे। किस प्रकार स: गुरमुख सिंह देवात्मा के सेवक बन गए व किस प्रकार धर्मपाल (अबदुलग़फ़ूर) ने 72,000 पैम्फलिट देवात्मा के विरुद्ध छापे, उनका ब्यान किया गया।

फिर देवरत्न जो 24 वर्ष तक देवात्मा से नाना उपकार पाकर किस प्रकार कृतघ्न बन गए व देवात्मा को तड़पाने के लिए उठ खड़े हुए। किस किस प्रकार देवात्मा को उनके बेटों देवानन्द व प्रफुल्लदेव ने मुकदमों के द्वारा सताया। उसका ब्यान बड़े सुन्दर ढंग से किया गया। देवात्मा के दफ्तर में काम करने वालों ने किस प्रकार विश्वासघाती बनकर देवहृदय को तड़पाया है, इस गाथा का वर्णन किया गया।

चारों तरफ से विरोधता के तुफान से देवात्मा तड़फ उठे। उनका शरीर व रूह मानों टुकड़े टुकड़े हो जाता रहा है। चार बार देवात्मा मौत के इतने नजदीक पहुंच गए कि बचने की कोई आशा नहीं रही।

भगवान देवात्मा ने किस प्रकार एक एक इंच कुर्बान होकर हमारे लिए किस प्रकार हित के सामान पैदा किए हैं। हमें ऐसे पूजनीय देवशास्त्र दिए हैं, हमें ऐसे उच्च कर्मचारी (फोटोज़ की तरफ इशारा करके) दिए हैं, ऐसा वातावरण दिया है जिनकी महिमा को ब्यान करना मुश्किल है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के विलाप का पाठ किया गया जिससे वातावरण विशेष बन रहा था। कितने ही जन परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ऐसी तड़प व उनकी व्याकुलता के आगे अपने हृदयों को झुका रहे थे। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही। इसके बाद देवप्रभावशाली मंडल में अपील की गई कि जो जन इस अद्वितीय मिशन में जीवन भर अपना समय देना चाहता हो।

समय - श्रीमान मुंशा सिंह जी-जीवनभर
श्रीमान सीता राम जी - 3 से 4 महीने
श्रीमान आसा सिंह जी - हर सत्संग में
श्रीमान ओम प्रकाश जी- हर सत्संग व प्रचार दौरे में
श्रीमान मुख्तयार सिंह जी- 2 महीने

इसके बाद पाप छोड़ने के लिए विनती की गई-एक प्रोफेसर ने मांस, शराब व चाय आदि छोड़े। उनके घर वाले इनसे इस लिए बहुत खुश हैं।

श्री कन्हैया लाल जी-मांस, शराब व पान, बीड़ी आदि छोड़े।

श्रीमान जलधर जी-आप कहते थे कि मैं रिश्वत के खिलाफ अपने स्टाफ में प्रचार करूंगा।

बच्चों की सभा

समय : दोपहर 1.30 बजे

इस सभा का संचालन डा० शशि बाला जी व सुश्री मोना जी ने किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के हृदय में बच्चों का क्या स्थान रहा होगा, वह इस बात से ही ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने पावन जन्म महोत्सव के विशेष दिन के व्यस्त कार्यक्रम में बच्चों की सभा के लिए आयोजन किया। बच्चों के सरल हृदय और मधुर कण्ठ से निकले देवात्मा के प्रति महिमा सूचक भजन व जीवन गाथाएं सारे वातावरण को मधुमय बना रहे थे। इस कोर्स में से गुजर कर बच्चे निश्चय ही कुछ न कुछ उच्च परिवर्तन लाभ करते हैं। इस सभा के साथ ही कुछ बड़ी बालाओं ने भी श्रद्धापूर्वक गीत

गाकर इस सभा की उपयोगिता को बढ़ाया। सभी भाग लेने वाले बालक बालिकाओं को समुचित रूप से पुरस्कृत किया गया। सभी श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर इस कार्यक्रम को सुनते रहे और धन्य धन्य होते रहे।

एक लैक्चर दिनांक 27 दिसम्बर, 2004
सायं 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर
वक्ता : डा. विनोद चन्द्र जी खेड़ा
विषय : नेचर के नियम, हमारे आत्मा की दुनिया में
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

वक्ता ने अपने लैकचर का आरम्भ एक सच्चाई पर आधारित चुटकुले (joke) से कियाः "यदि आप किसी को convince नहीं कर सकते (कोई बात तर्क पूर्ण ढंग से ठीक से समझा नहीं सकते) तो उन्हें confuse कर दो" (उलझा दो)। उन्होंने बताया कि अध्यापक लोग तथा धर्म प्रचारक व नेता अकसर ऐसा ही करते हैं । इसी कारण सारी मानवता अपने जीवन और उसमें नेचर के नियमों के लागू होने के विषय में अज्ञान तथा उलझन की हालत में है ।

नेचर की परिभाषा देते हुए वक्ता ने बताया कि नेचर पर नियमों का राज है न कि प्रकृति से ऊपर किसी और अलग अस्तित्व का । नेचर अपने आप में सम्पूर्ण है, इसलिए उस से बाहर कुछ भी नहीं । बहुत पढ़े लिरवे लोग भी अनेक बार अज्ञानवश मिथ्या विश्वासों के कारण बहुत घाटा उठाते हैं । इस उलझी हुई हालत के कारण मानवता ने अपने लिए बहुत समस्याएं रवड़ी की हुई हैं । 20 वीं शताब्दी में विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक एल्बर्ट आईनस्टाईन (Albert Einstein) ने कहा है कि जिस दिमाग से तुमने समस्याएं रवड़ी की हैं, उसी दिमाग से तुम उन्हें हल नहीं कर सकते ।

उनका 'दिमाग' से अभिप्राय है हमारी भाव शक्तियां जो हमारे दिमाग को चलाती हैं, इसलिए हमें अपनी समस्याओं को हल करने के लिए अपनी भावशक्तियों को समझना और उन्हें गल्त पाने पर बदलना होगा । उसके लिए हमें अपने दिल दिमाग को खुला रखना होगा, तथा वैज्ञानिक सिद्धान्तों को अपने दिल दिमाग में स्थान देना होगा। वास्तव में नेचर के विकास क्रम में हमें जानवरों से अलग थलग करने वाली हमारी उन्नतशील मानसिक शक्तियां ही हैं। वे हमें इसलिए ही मिली हैं कि हम उनका सदुपयोग कर सकें ।

वक्ता ने बताया कि नेचर में परिवर्तन का नियम अटल रूप से काम करता है तथा प्रत्येक अस्तित्व को उसके रूप व गुणों के विचार से हर क्षण बदलकर पहले से बेहतर या पहले से बदतर बनाता है। इसी परिवर्तन के फलस्वरूप चिम्पान्ज़ी व गुरीला नामक जानवरों से मनुष्य का विकास हुआ है। कट्टरपंथी धार्मिक नेताओं ने वैज्ञानिक खोजों का सदा विरोध किया है जिससे मानवता ने बहुत बड़ा घाटा उठाया है। अमरीका जैसे देश में भी डार्विन द्वारा रवोजे विकास के सिद्धान्त (Evolution) के विरुद्ध धार्मिक नेताओं का अब तक युद्ध जारी है परन्तु इसमें अन्ततः जीत सच्चाई और विज्ञान की ही होती रही है ।

नेचर में यह अच्छा और बुरा परिवर्तन कौन लाता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वक्ता ने विज्ञान के आधार पर उत्तर दिया कि शक्ति (force) ही परिवर्तन लाती है चाहे वह निर्जीव जगत में हो, चाहे जीवधारी जगत में ।

श्रीमान डा० खेड़ा ने बताया कि सभी शक्तियाँ या आकर्षण (attraction) की होती है या विकर्षण (repulsion) की । इन आकर्षण और विकर्षण शक्तियों द्वारा निर्जीव और जीवधारी जगत में आ

रहे परिवर्तन को उन्होंने उदाहरणों द्वारा समझाया और यह बात साफ की कि किस प्रकार हमारे भीतर की नीच शक्तियां (यथा शराब, माँस, चोरी, जुआ, सैक्स की गुलामी, घमंड, आलस्य, स्वाद वासना इत्यादि) नेचर की अन्य नीच शक्तियों और नीच अस्तित्वों के प्रति हमारे भीतर आकर्षण पैदा कर देती हैं तथा भलाई और भली शक्तियों के लिए विकर्षण । उदाहरणतया एक ईमानदार आदमी में बेईमानी के लिए स्वभावत: विकर्षण होता है, इत्यादि ।

न्यूटन का तीसरा नियम अध्यात्मिक दुनिया में कैसे लागू होता है, उसे स्पष्ट करते हुए वक्ता ने बताया कि किस प्रकार हमारी प्रत्येक बुरी चिन्ता व क्रिया से प्रतिक्रिया द्वारा हमारे आत्मा में बुरा परिवर्तन आ जाता है तथा विश्व में नीच अनमेल व अशांति पैदा होती है । हमारी हर भली और positive चिन्ता व क्रिया न केवल औरों के लिए लाभदायक तथा उच्च मेल लाने वाली होगी बल्कि हमारे अपने लिए भी ।

निष्कर्ष यह की जैसी शक्ति, उसका वैसा अमल। नीच खुशियां जो नीच शक्तियों की तृप्ति से मिलती हैं, अस्थाई हैं तथा हमें नुकसान पहुंचाने वाली हैं जबकि उच्च शक्तियां (यथा हमदर्दी, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता, श्रद्धा, सम्मान, कृतज्ञता) स्थायी उच्च सुख और उच्च खुशियां देती हैं, स्वयं को भी और दूसरों को भी ।

आत्मा किसी व्यक्ति की इन्हीं (अधिकतर) नीच तथा उच्च शक्तियों के समूह का नाम है। आत्मा की निर्माणकारी शक्ति माँ के पेट में शरीर को घड़ती है। आत्मा की शक्तियाँ ही मनुष्य को इस संसार में न केवल जीवित रखती हैं अपितु उससे अच्छी व बुरी चिन्ताएं व क्रियाएं भी करवाती हैं ।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा नेचर के विकास के नियम के अनुसार अपने निराले आत्मा में अद्भुत तथा अद्वितीय देव शक्तियाँ लेकर आविर्भूत हुए हैं। ये देवशक्तियाँ थीं उनके देवात्मा में सत्य और शुभ के लिए पूर्णाङ्ग. अनुराग तथा मिथ्या और अशुभ के प्रति पूर्णाङ्ग. वैराग शक्तियां । इसलिए वे नेचर में विकासकारी शक्तियों के पूर्ण अंग और समर्थक होने के कारण उपरोक्त देवशक्तियों के अथाह सागर हैं जिनसे हम जितना लाभ उठा सकें उतना हमारा सौभाग्य है । वक्ता ने अपने परिवार में आए उच्च परिवर्तन का, डा० हरनाम सिंह जी के जीवन में आये अति उच्च परिवर्तन का, राधा स्वामी सत्संग (ब्यास) के प्रमुरव (गुरू) श्री गुरमिन्दर सिंह जी के पड़दादा श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जी के जीवन में आये आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन का ज़िकर करके श्रोताओं को परम पूजनीय भगवान देवात्मा के श्री चरणों से जुड़ने और लाभ उठाने का आह्वान किया । इस दौरान नेचर के विकास कार्य के विषय पर कुछ देर की विडियो फिल्में भी दिरवाई गई जिनसे श्रोतागणों को यह समझने का अवसर मिला कि हम मनुष्यों का किस प्रकार विकास हुआ है तथा यदि हम नेचर में उच्च मेल की ओर अग्रसर नहीं होंगे तो उन ९९ प्रतिशत नस्लों की तरह जो अब तक आई और सदा के लिए लुप्त (समाप्त) हो गई, हमारा भी सर्वनाश हो जाएगा। वक्त्व्य के अन्त में परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित एक अति मधुर तथा प्रभावशाली गीत "प्रकृति तव संग मैं जुड़ जाऊं, नेचर तव संग मैं मिल जाऊं" वक्ता के विद्यार्थियों द्वारा गाया गया। अन्त में सभापति जी ने वक्ता तथा श्रोतागणों को धन्यवाद दिया और सबसे बढ़कर परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रति आभार प्रकट किया जिनकी अपार कृपा से अति कठिन विषय पर यह लैक्चर बहुत स्पष्ट और अच्छे ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया।

भाव प्रकाश

पहली सभा : 8.00 बजे

दिनांक 28 दिसम्बर, 2004

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

भजन : देवस्तोत्र के गान और व्याख्या के पश्चात् नए सेवकों के बनने के लिए कामना विषयक भजन का गान किया गया। श्रीमान सभापति जी ने दो सौभाग्यवान जनों को सेवकी की प्रतिज्ञाएं करवाईं। वह हैं -

श्रीमान प्रभात कुमार जी

श्रीमति दुर्गा देवी जी

हाजरीन ने खुशी से नए सेवकों के गले में हार डाले व दान भी दिया। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भावप्रकाश की सभा के लिए लोगो को आमंत्रित किया।

श्रीमान जगदीश जी : आपका दिल भरा हुआ था व आंखों में आंसू जारी थे। मैं हाथ बांधकर माफी मांगता हूं कि जिस तरह खाने का प्रबंध पहले ही करना चाहिए था वह पहले दो खानों में नहीं कर सका। Toilet की एक side की सफाई का व पानी का उचित व बढ़िया प्रबंध नहीं था। इस सब के लिए बहुत ही अफसोस है। आगे के लिए मैं प्रार्थना करता हूं कि उपरोक्त सभी पक्षों में एक महीना पहले ही जी तोड़ कोशिश करूंगा। मेरी इस कमी के कारण आप लोगों को कष्ट हुआ (रो-रो कर) आप सब से इस के लिए मुआफी मांगता हूं।

श्री इंदर भूषण भण्डारी (एडवोकेट): मैं वकील हूं मुझे 45 साल से सौभाग्य है कि इस सत्संग से जुड़ा हुआ हूं। मैंने समाज की कृपा से कोई 10 लाख रूपया बचाया है। मैं शराबी, कबाबी, व जुआरी होता, बदचलन होता तो यह सब बर्बाद हो जाता। मेरे कुछ Class-fellow शराब पीते पीते मर गए। High court के Judge भी शराब न छोड़ कर 50 साल की आयु में चल बसे। मेरी पत्नी व मेरी बेटी मेरा बहुत साथ देते हैं। मुझे सत्संग में लाते हैं। मैं पापी हूं जो पत्रिका मेरे पास समाज की तरफ से भेजी जाती है वह पढ़ता नहीं हूं। अब प्रतिज्ञा करता हूं कि इसे जरूर पढ़ूंगा। हमारे खानदान का भी शराब ने बेड़ा गर्क कर दिया है। बड़ी पदवियों पर होकर भी शराब पीते हैं। मेरे घर में जरूर सभाएं करवाई जाएं और हमें बचाया जाए। यहां जिस तरह धर्म सम्बन्धियों को एक दूसरे से माफी मांगते देखा, वह स्वर्ग था। और स्वर्ग क्या होता है? मैंने इस संगत से जितना लाभ उठाना चाहिए था वह नहीं उठाया। उसका दुःख हो रहा है। माता जी की मैंने, मेरी पत्नी व बच्चे ने खूब सेवा की। इसकी हमें तसल्ली है। मैं खेड़ा साहिब के परिवार से बहुत प्रभावित हूं। यह खानदान सारे भारत से ऊँचा खानदान महसूस होता है। मैं आगे से जहां सभाएं होगी, मैं बाकायदा वहां जाकर सभा सुनकर लाभ उठाऊंगा। अपनी कितनी ही कमियां नजर आ रही हैं व दुखी कर रही हैं।

डा. शशि बाला जी :- मैं देवधर्म की वेबसाईट में Data-entry में मदद करना चाहती हूं।

श्रीमान गुरूदेव राज जी (केसूपुरा)- इस दर से जो बरकतें हासिल हुई हैं, उसका ब्यान करना मुश्किल है। गुरु महाराज की अपार कृपा है। श्रीमान जी ने हमारे ऊपर बहुत संग्राम किया है। हमें मिथ्या की गहरी खड्डों से निकाला है। गुरुदवारे, राम लीला करने वाले, डेरों में जाकर सेवा करने वाले, वहां से निकल आए। हमारा जीवन नीच था, नजर नहीं आता था। (बहुत दुखी व भरे दिल से) माता पिता को दुःख देता था। बात बात पर झिड़क देता था व अपमान करता था। इन हालात से निकाला है। अब

चार साल से हर रोज उनके चरणों में सिर रख कर प्रणाम करता हूं। भाई से भी सम्बंध खराब था। देवता जैसे भाई के सम्बंध में मैं गलत व्यवहार करता था। (रो-रो कर) भाई साहिब ने जिस तरह उन्हें कहा गया वैसे ही चुपचाप घर के बंटवारे को मान लिया।

मेरी सब बच्चों और नए जनों के चरणों में बेनती है कि यहां बार-बार आएं। यह निराला दर है। इस जगह से कुछ (भलाई) लेकर जाना है। खाली हाथ बिल्कुल न जावें।

श्रीमान आसा सिंह जी (पदमपुर) मैं अपना गुर्दा किसी जरूरतमंद को देने को तैयार हूं। मैं अपनी मां की फोटो को हर रोज सुबह उठकर प्रणाम करता हूं। मेरी बिनती है कि जिनके माता पिता इस दुनिया में मौजूद हैं उन्हें सुबह सुबह उठकर प्रणाम करें।

स्वामी श्रद्धानंद जी (रोहतक) मैं सब को प्रणाम करता हूं। मुझे यहां की सभाओं से व literature से बहुत लाभ होता है। महसूस होता है कि यहां मेरे जीवन में भी परिवर्तन आया है। मेरे अंदर भाई साहिब के उपकार नजर आने से हमारे सम्बंध बहुत बेहतर हो गए। इन सभाओं से दिल और दिमाग ही नहीं बल्कि जीवन परिवर्तित हो जाते हैं। अपने वैराग्य में 24 साल गुजार दिए। माता पिता की सेवा इस सत्संग ने करवा दी। वरना बेसुध रहता।

डाक्टर विनोद जी खेड़ा : पिछले साल महोत्सव से दो लाभ हुए थे। सारा साल हर रोज धर्म पुस्तक पढ़ने का साधन करता रहा हूं। लाभ उठाता रहा हूं। इसके बाद दैनिक अखबार को देखता रहा हूं। कल सुबह 6:30 बजे से रात 9.00 बजे तक संग्राम में रहा हूं। दूसरा लाभ यह हुआ है कि पिछला एक माह हर रोज सभा करते रहे हैं। भजन गाते रहे हैं, जीवन कथाएं पढ़ते रहे हैं। जिससे एक एक छोटे व बहुत नटखट बच्चे में भी अच्छा परिवर्तन आया है। तीसरा फायदा यह हुआ है कि मैंने गुरु महाराज के सम्बंध में मेमोरियल फाऊंडेशन रजिस्टर्ड करवा ली है। 2 लाख 80 हजार से ऊपर रूपए की पुस्तकें छापी हैं जिन्हें अधिकांश मुफ्त बांटना है। इस सब भले के लिए भगवान को धन्यवाद देता हूं। जगदीश जी ने जिस तरह संग्राम किया है, इससे मुझे अपने आप पर शर्म आती रही है कि मैं इनकी इसमें कुछ सहायता नहीं कर सका।

होशियार सिंह जी : मेरी शादी में एक माह बाकी है। मेरे दोस्तों ने कहा कि अगर आप शादी में शराब मांस न दोगे तो हम न आएंगे। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अब शराब मांस का इस्तेमाल किसी कीमत पर नहीं होने दूंगा चाहे कोई आए या न आए।

सुखदेव जी ने (रो रो कर) प्रार्थना कि माता पिता जी को दु:ख न पहुंचाओ व उनको सुबह उठकर उनके चरणों में प्रणाम का साधन जरूर किया करो। हमारे माता पिता में जो विशेषताएं है वह मुझे किसी रिश्तेदार में नजर नहीं आ रही। व जो कुछ उपकार उन्हांने हम पर किए हैं वह बहुत ही विशेष हैं। उनको हमारे से कितनी तकलीफें पहुंच रही हैं जिनका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता। (होशियार सिंह जी का दिल भरा हुआ था।) जिसमें उसने प्रतिज्ञा की कि मैं रोजाना माता पिता के चरणों में प्रणाम किया करूंगा।

नरेन्द्र दत जी धीमान (खतौली) मुझे अपनी एक नीचता बार बार याद आती रही है। और मुझे बेचैन करती रही है। उसका प्रकाश करने के बगैर मैं रह नहीं सकता। अपनी एक गलती के लिए उन्होंने अपने एक उपकारी से रो रो कर माफी मांगी। नए सेवकों के बनने की मुझे बहुत खुशी हुई है।

श्री ब्रिगेडियर जगबीर सिंह जी सिंधू (जोध पुर) :- नीच भावों का त्याग और उच्च भावों का ग्रहण इस शिक्षा से बहुत लाभ है। समाज की कृपा से शराब से सारी उम्र बचा रहा। सन 1994 से मांस, अण्डा, व शिकार से बच गया। उसके बाद मैंने अपने

कोटे से किसी के लिए भी शराब की बोतल नहीं दी। इस मिशन में सम्बंधों पर बहुत जोर दिया जाता है। एक इंगलिश लेखक ने खूब लिखा है। मां की कदर करलो, जब मां चली जाएगी तक फिर महसूस करोगे। जिनके माता पिता है वह जी भरकर सेवा कर लें ताकि बाद में कोई पश्चाताप करना न पड़े।

स्वामी शरण जी अग्रवाल (दिल्ली) : मैं सेवक तो नहीं बन सका। सेवक न होने पर मुझे आदरणीय शादी लाल जी जैसे सुसर मिल गए। बेशक मैं राधा स्वामी मत को मानता हूं मगर मैं 90 फीसदी के करीब देवसमाजी ही हूं। समाज का मेरे जीवन पर बहुत असर है। मैंने माता जी की टट्टी-पिशाब उठाने की सेवा खुशी-खुशी अपना सौभाग्य जानकर और अक्सर भजन गा-गाकर की है।

गुरु महाराज की शक्ति मुझे खींच रही है। जो कुछ भी आज तक हूं वह सब देवसमाज की ही देन है। मैं गुरु महाराज जी का बहुत ही आभारी हूं। श्रीमान जी का भी आभारी हूं जो मुझे याद करते रहते हैं। मैं वह वक्त देखना चाहता हूं जब मैं गुरुमहाराज के चरणों से पूरी तरह जुड़ जाऊँ।

श्री बलकार सिंह (मल्लेका) :- मेरी नीचताएं बहुत हैं। मैं मां को, भाई को, पशुओं को बहुत सताता रहा हूं। अब दिखाई देता है। मां के गुण व उपकार याद आते हैं। मां के चरणों में जब प्रणाम करता हूं तो रोना आ जाता है। कुछ दिनों के बाद प्रणाम रोजाना नहीं होता। भाई मेरी बहुत सेवा करते हैं। अब मैं हर रोज़ माता जी के पांव में सिर रख कर प्रणाम किया करूंगा और भाई साहिबान को कम से कम पन्द्रह दिन बाद रोज जरूर प्रणाम किया करूंगा।

श्रीमान अवतार सिंह जी मोगा :- सभा में एक घटना सुनाई गई कि एक शराबी अपने बीमार बच्चे के लिए दवाई लेने गया, वापिस नहीं आया। शराब पीता रहा और बच्चा मर गया। मैं ही वह शराबी हूं। बहुत थोड़ा सा गुरु महाराज को अधिकार दिया है। गुरु की बेहद कृपा हुई है। मेरा जीवन परिवर्तन गुरु की महिमा है ये दर बहुत अच्छा लगता है, इस जगह के लिए आकर्षण है। मैंने बहुत बार शराब छोड़ने की कस्में खाई थीं। धार्मिक स्थानों पर जा जाकर प्रतिज्ञा की थी मगर शराब न छोड़ी गई। एक बार डोली भाई के मशहूर गुरुद्वारे में गए। बार बार सौगंध खाई। पहले चार पांच बजे शराब पीते थे। उस दिन बारह बजे ही पी ली। अब सच्चे मान सम्मान का जीवन मिला है। बच्चों की पढ़ाई के लिए लाख लाख रूपए की फीस भी भरी है। मुझे अपने आप पर शर्म आती है कि मैंने पीली पगड़ी नहीं बांधी। अगले साल एकाकारी पहनकर आऊंगा। आगे से हमेशा समाज में ही ठहरेंगे। कुल सभाओं से लेट नहीं होंगे। श्रीमान जी पिता के रूप में नजर आते हैं। गुरु ने संत पैदा कर दिए हैं। मैं पांच सात दिन के लिए जब भी बुलाएंगे आऊंगा। मैं कोई बहाना नहीं बनाऊंगा और जरूर सेवा करूंगा। खेड़ा साहिब और बहन जी के लेक्चर से बेहद फायदा हुआ है। हम सच्चे दिल से इस दर से जुड़े रहें ताकि हमारा भला हो सके।

श्रीमान बलदेव सिंह जी (मल्लेका) : मेरे अंदर अच्छे वलवले पैदा होते रहे हैं। हमारे बुजुर्ग बहुत अच्छे थे। लोगों की सेवा करते थे। श्रीमान जीत सिंह जी का रूप बहुत अच्छा लगता है। वह हमारी बहुत सेवा करते हैं। यहां आकर बहुत लाभ होता है। (वह इस दर से जुड़ने का सौभाग्य महसूस कर रहे थे।)

श्रीमान हरदेव सिंह जी : पहले मैं महसूस करता था कि मैं जल्दी सेवक बन गया। कुछ साल खा पी लेना था। अब अपनी रक्षा देखकर बहुत खुशी मिलती है। धर्म सम्बन्धियों ने मेरी बहुत रक्षा की है। मैं उनकी सेवा करना चाहता हूं। उनकी सेवा करके राहत होगी। बेशक दो साल से घर अलग हो गया हूं। मगर घर में दीवार नहीं खेंची। कोई नहीं कह सकता कि हम अलग अलग रह रहे हैं। इधर

सत्संग में आने पर बहुत भला हो जाता है।

श्रीमान गुरदेव राज जी : मैं अपने ट्यूबवैल सम्बंधी बोर के सम्बंध में काफी फिकरमंद था। हरदेव सिंह जी ने मेरे ट्यूबवैल पर एक हफ्ता मेरी बेहद सेवा की है। मेरा बोर कामयाब करवा दिया। दिली भावों से उत्साह के साथ सेवा की है। इसका मैं कर्ज़ा नहीं उतार सकता।

स. बूटा सिंह जी (कल्याण) मुझे भी कुछ लाभ हुआ है। मैं महोत्सव से पहले ही आने की इच्छा रखता था, नहीं आया। अब मैं दो दिन पहले आउंगा। व सेवा करूंगा। मेरी पत्नि की सख्त बीमारी में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने मेरी बहुत मदद की है। उसे मौत के मुंह से बचा लिया। एक रोज एक कार वालों ने मेरी बेहद सेवा की। गांव में सत्संग में सेवाकारी बनूंगा।

श्री मोहन जी (गजसिंह पुर) इंसान एक बुराई रखता है तो और बुराईयां पैदा हो जाती हैं। मैं बुरी संगत में जाकर जर्दा खा लेता हूं। मैंने धर्म सम्बन्धियों से पहले झूठ बोल दिया था। अगली बार जरूर सेवक बनूंगा।

श्रीमान मधुसूदन जी : अपनी नीचता की तरफ ध्यान गया है। श्रीमान बलबहादुर जी ने सभा में जो भाई के सम्बंध में जिसे कैद हो गई थी घटना सुनाई उससे मुझे बहुत लाभ हुआ। मेरे भाई के सम्बंध में भी ऐसे महसूस हुआ। मैं किसी जगह भी खड़ा होने के लायक नहीं हूं अगर भाई के सम्बंध में अपना जीवन अच्छा न बना सका। आगे से कोशिश करूंगा कि इस तरह की हरकतें न हों।

श्रीमान प्रेम चन्द जी बणी (सिरसा) : आज मेरी धर्मपत्नी जी सेविका बनी है। मुझे इस बात से अपार खुशी है। असल में उन्होंने ही मुझे सेवक बनाया है। मेरी अपना उनके सेवक बनने में एक फीसदी भी रोल नहीं है। वह अपने आप बहुत खुशी से, स्वेच्छा से सेवका बनी हैं। यही मुझे इस स्थान पर खींच कर लाती हैं। मेरी बहुत मदद करती हैं। मैं इनका धन्यवादी हूं।

श्रीमान तेज राम जी कल्याण : मुझे सब सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। 3-4 साल पहले मैंने वायदा किया था कि मैं हर महोत्सव पर पहुंचा करूंगा। मैं पिछले साल नहीं आ सका बहुत घाटे का सौदा महसूस हुआ। गांव में सभाओं में लेट हो जाता हूं। अब महसूस होता है कि यह श्रीमान जी का व गुरु शिक्षा का अपमान है। यह महसूस होता है कि हितस्रोत का पूरा पाठ नहीं कर पाता। अब इसको व दूसरी पुस्तकों को पढ़ने का यत्न करूंगा। हम सब परिवार ही सेवक हैं। जिस तरह सब को वक्त देना चाहिए वह नहीं दे पाते। मैं इसमें पूरा योगदान दूंगा। बच्चों को भी लाऊँगा और सत्संग से व सभाओं से लाभ उठाऊँगा।

श्री बरवतौहर सिंह जी मोहाली : मैं सब सभाओं में शामिल हुआ हूं। अपनी कमियां बहुत नज़र आई हैं। संगत से परे जाकर दिल कठोर हो जाता है। मेरा भतीजा गांव चला गया। यह मेरी गलती है कि अगर मैं न जाने देता तो उसका बहुत भला होना था। मैं गांव में गया, वहां एक बड़ा परिवार है। उसके एक सदस्य की नशे के कारण बहुत बुरी हालत थी। उस नौजवान को बचाने की चिन्ता करने और संगत में लाने से भला हो जाता। बहुत दु:ख की बात है कि वह लड़का शराब पीकर खत्म हो गया।

श्रीमती वीर बाला जी समराला : जो कुछ प्राप्त हुआ है उसका ब्यान नहीं हो सकता। श्रीमान जी हमारे पास जरूर आवें। हमारे पास आना बिल्कुल न छोड़ें। अब मैं रोज एक घंटा पुस्तकों का पाठ किया करूंगी। इस स्थान से जुड़े रहने में ही खैर है।

फिर इनके पति ने इजहार किया कि 9-10 साल बाद जाकर फिर महोत्सव से कुछ लाभ हुआ है फिर यहां पर ही अपना भला होने का विश्वास पैदा हुआ है।

श्रीमति संतोष जी अग्रवाल दिल्ली :- अपने

आप को बहुत सौभाग्यशाली महसूस करती हूं कि मेरे पिता जी और दादा जी सब बहुत अच्छे और खास देवसमाजी थे। मेरे पति जी बहुत अच्छे हैं। मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। मैं इनसे ऊँचा भी बोल पड़ती हूं। अब मैं हमेशा महोत्सव पर आऊँगी। पहले आने की कोशिश करूंगी। हमारे यहां पर सभाओं की कमी महसूस होती है वहां पर भी सभा करवाई जाए।

श्रीमान मनोज जी मानसा :- श्रीमान जी ने मुझे Special Card भिजवाए। फोन करवाए। और मुझे बुला लिया। मैं उनका बहुत धन्यवादी हूं। कई बार मैं उनकी आज्ञा पूरी नहीं करता। उसके लिए श्रीमान जी मुझे माफ करें।

श्रीमान अनिल जी पदमपुर : मुझे जितना लाभ उठानाा चाहिए था, उतना मैंने नहीं उठाया। इस शिक्षा को जीवन में उतार सकूं व कुछ सेवाकारी हो सकूं। तभी मेरा भला होगा।

श्रीमति भरपूर कौर जी मोगा : मुझे महसूस हो रहा था कि मैं बहुत लाभ उठा कर उसको छुपा रही हूं। 1980 में मेरी शादी हुई। चार दिन पति जी का कुछ पता ही नहीं लगा कि वह कहा हैं व मेरी किससे शादी हुई है। वह शराब में धुत रहे। 1980 से लेकर 1992 तक मैंने नरक देखा। मैंने पाठ करने की कसर नहीं छोड़ी। धर्म स्थानों पर जा-जाकर नाक रगड़े व मिन्नते मांगी। मगर कुछ लाभ न हुआ। 1992 के बाद गुरु महाराज का दर मिला। जहां आकर स्वर्ग देखा। यह सब गुरु महाराज की कृपा है। मेरे पति अक्कड़ कर कहा करते थे कि "मैं तेरे साथ बंधा हुआ नहीं हूं जहां जी करेगा जाऊंगा" अब घर में स्वर्ग आया है। वह बाजार भी जाते हैं तो पता देकर जाते हैं और वहां कुछ देर लगती हो तो वहां से फोन करते हैं। मैं नरक से निकली हूं। जितनी ज्यादा दुःखी थी उतनी ही अब ज्यादा सुखी हूं। गुरु महाराज की कृपा का कर्जा उतारा नहीं जा सकता।

इसके बाद सभापति जी ने क्या गुरुमहाराज को व क्या अन्य सहकारी शक्तियों को इस पावन उत्सव के लिए धन्यवाद दिया।

शोक समाचार

बहुत ही दुःख व शोक की बात है कि श्रीमती सुन्दरी जी अग्निहोत्री Retd. Deputy Director Education, H.P. धर्मपत्नी श्रीमान विजय कुमार जी अग्निहोत्री I.A.S. Retd. का 25 दिसम्बर दोपहर के समय अपने ही घर में 3124, सैक्टर 21 डी, में बेहद दुःख की हालात में अचानक देहांत हो गया है। आप 74 वर्ष की थीं। हम श्रीमान विजय कुमार जी व उनके बच्चों के साथ गहरी हमदर्दी व शोक का प्रकाश करते हैं। देह त्यागी आत्मा की परलोक में रक्षा व शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। **-मंत्री**

दक्षिणी भारत में समुद्र के अंदर आए भुचाल के कारण हजारों लोग मौत के मुंह में चले गए। और लाखों लोग मुसीबत में फंसे हैं। इस महान विपत्ति के समय हमारा फर्ज़ बनता है कि विपत्तिग्रस्त देशवासिओं की अधिक से अधिक सहायता करें। **-मंत्री**

BLESSED ARE OUR SOULS

A majority of those who attended this year's Mahotsava were very greatly blessed with most beneficial showers of Bhagwan Devatma's '*Dev Prabhavas*'.

Bhagwan Devatma's manifestation on our earth was a giant leap in the process of evolution just as evolution took a giant leap when human beings first appeared on our earth millions of years ago. The human beings were different from chimpanzees and gorillas in that the former were endowed with special mental faculties which had the capacity to grow and flourish. With these evolutionary brains, mankind has discovered inumerable truths about nature, its forces, the evolutionary and destructive changes taking place in nature and put a lot of information thus gained to use for the benefit of humanity. However, the furtherance of the cause of evolutionary process was very badly blocked due to the influence of destructive forces inside and outside human entity and hence the need for a new entity who would be a step higher on the ladder of evolution. Bhagwan Devatma was born with all sided and complete, obsessive, highest love for truth and goodness and all sided and complete, obsessive highest hatred for falsehood and evil. As a result of these highest loves and hates, he developed *Dev Shakties* in his most enlightened soul in the spiritual world which can be likened to our sun in the physical world. We know that the sun is the immense store house of light and power to sustain life of all existences on the earth and without which we cannot exist as our earth would be at a temperature of -270°C! Likewise, further human evolution will depend on the receiving and absorption of the *Dev Jyoti* (Devatma's highest light) and *Dev Tej* (Devatma's highest power) constituting the '*Dev Prabhavas*' which are freely available if we are receptive to them.

We relate herein some stories - true stories - of a few of those who were receivers of the '*Dev Prabhavas*' at the Mahotsava 2004 which turned their hellish life into a life of paradise on the earth proving the great statement of Bhagwan Devatma who had said,

"***I want to bring about true paradise in this world. I want to usher in such a religious life which destroys all types of sins and evils, which produces such sweet and fully dependable relationships because of which human life can become sweet and full of comforts in all respects***."

We know that a large number of people get hooked to intoxicants like drugs, alcohol, tobacco etc. So many families of drunkards and drug addicts have been totally ruined or left in this cruel world to fend for themselves. In Mahotsava 2004, Shriman Avtar Singh ji described how alcohol had ruined his and his family's life. He narrated the most tragic incident of his life which resulted from his slavery to alcohol. His son was very sick and he went out to bring medicine for him but due to addiction to alcohol and alcoholic friends, he went in for a drinking spree and eventually returned home after several hours to find his son dead due to non availability of medicine which he had gone to fetch. Such tragedies are not very uncommon in our world of today. He also highlighted the fact that he went to many religious places of worship to pray for getting rid of alcoholism but to no purpose. He narrated one such incident where he went especially to a religious place renowned for salvation and fervently prayed to Waheguru to save him from the shackles

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

of alcohol. But on that very day, he started drinking at 12 noon instead of his usual drinking time of 3 to 4 p.m. !!!

His wife told the audience that after her marriage in 1980 with him, she did not even know who her husband was for a full 4 days because her husband was away on drinking sprees immediately after marriage. You can very well imagine the pitiable plight of Smt. Bharpur Kaur and inumerable ladies like her. She said that from the time of her marriage in 1980 upto 1992, she was living a life worse than one that can be imagined in hell. She used to read religious scriptures with great devotion time and again in the hope of solving her husband's drinking problem but all of this failed to deliver the desired results. She expressed her great happiness at the fact that they were most fortunate to come to the feet of Bhagwan Devatma in 1992 after so badly suffering from that miserable life. A great transformation took place in their lives since 1992. Their **"worse than hell life"** transformed itself into a **"life in a paradise'**. Now, there is, unbelievable harmony in their family. Whenever her husband goes out for some work now, he always tells her when he will be back. Either he leaves his telephone no. where he can be contacted or in case he gets delayed for some reason, he rings her up to inform her about the delay. Now they are able to spend their hard earned money on the education and welfare of their children which was earlier being spent on ruining them. There is another wonderful thing happening in their life. Everyone in their neighbourhood has stopped drinking because of which the atmosphere there is very serene. One can imagine the peace and tranquility that prevails in that locality now in the absence of alcoholics all around their house.

For some people obsessive love for money does not allow them to lead a normal, peaceful life. Their slavery to money or property makes them compulsorily ignore important aspects of their life like caring for and giving quality time to their children and taking care of their health. Such persons go into severe depression when there is loss of their wealth or earnings etc. Several are known to have committed suicide on receiving the news of financial losses.

A Maharashtrian person, Sanjay Jain, working in Meerut as a peon, narrated how he was saved from ruin by the higher influences of Bhagwan Devatma's *"Dev Prabhavas"* being distributed at this Mahotsava. His mother-in-law had asked for a loan of Rs 20,000 for her son from him more than three years ago. Being a poor peon and still wanting to help his brother-in-law and mother-in-law, he borrowed the money from a money lender on heavy interest and gave it to them. Thereafter, instead of repaying his loan with interest, his in-laws stopped

Remaining Part on page 2

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts